- पंचम अध्याय -

'पत्तों की बिरादरी' का उद्देश्य

पंचम अध्याय

" पत्तों की बिरादरी " का उद्देश्य।"

उद्देश्य उपन्यास का अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण तत्व है। विना किसी उद्देश्य के उपन्यास हो ही नहीं सकता। हम अपने निजी जीवन में भी किसी निश्चित प्रयोजन को सामने रखकर ही कोई ठोस कदम उठाते हैं। साहित्य समाज का दर्शन होता है। अत: समाज में स्थित शाश्वत घटनाओं को उद्घाटित करना ही लेखक का प्रयोजन होता है। कृष्णदेव शर्मा के अनुसार " उपन्यास का उद्देश्य शाश्वत सत्य का उद्घाटन करना है, और वह शाश्वत सत्य की परिक्षा का आधार क्या हो ? विद्वानों के अनुसार इस शाश्वत सत्य की परख दो दृष्टियों से की जा सकती हैं - पहली तो यह कि वह सत्य के कितना निकट है, दूसरी यह कि उसमें नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा किस सीमा तक हुई है।"[१] साहित्य मनोरंजन के लिए भी लिखा जाता है। मनोरंजन करना भी तो एक उद्देश्य ही है। जीवन में मनुष्य का मनोरंजन मनुष्य के सहज कार्य-व्यापारों और उसके आपसी परस्पर सम्बन्धों तथा सहजीवन के बीच होता है।

लेखक उपन्यास लिखता है और यह उपन्यास लिखना भी अपने में एक उद्देश्य ही है। कोई लेखक उपन्यास तभी लिखता है, जब वह किसी कथा, किन्हीं पात्रों और उनके जीवन रहस्यों से उसका परिचय हुआ हो या तो उसके जीवन के अनुभवों के आधारपर उसकी कल्पना हुई हो। उपन्यास की कथा को लेखक कल्पना तथा अपनी अनुभूतियों को अन्यों के साथ मिलाकर उससे सहयोग स्थापित कर उपन्यास का लेखन करता है। उपन्यासकार अपने सिध्दान्त अथावा उद्देश्य प्रत्यक्ष रूप से

न कर वार्तालाप या घटनाओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से करता है। और इस प्रकार नीरसता एवं अरोचकता से अपने उपन्यास को बचा लेता है। प्रतिपादय सदैव महान और प्रभावशाली होना चाहिए। इसके साथ-साथ अभिव्यक्ति की शैली और परिस्थितियाँ भी प्रभावोत्पादक होनी चाहिए। इन अभिव्यक्ति के दो ढंग हैं --

१) आत्मकथात्मक शैली ।

२) विश्लेषणात्मक शैली ।

आत्मकथात्क शैली में उद्देश्य की अभिव्यक्ति सरल और सुंदर ढंग से होती है। कहीं-कहीं लेखक कथावस्तु, शैली और तथ्यकथन के ढंग से भी विशिष्ट नैतिक उद्देश्य का प्रतिपादन कर देते हैं। यह नाटकीय ढंग कहलाता है।

विश्लेषणात्मक प्रणाली में लेखक आलोचक की भाँति पात्रों का गुण-दोष विवेचन करता हुआ अपने उद्देश्य को स्पष्ट करता है। कितने ही पाठक ऐसे है, जो प्रेमचंद के उपन्यासों को केवल समय बिताने मात्र के लिए पढ़ते रहते है, वे यदि प्रेमचंद की उस मर्मान्तक वेदना को नहीं समझ पायें तो समाज की कुरीतियों और वर्गभेद की विडम्बनाओं के कारण निरन्तर बढ़ती ही गई तो उसमें उपन्यासकार प्रेमचंद का कोई दोष नहीं। स्पष्ट है कि उपन्यास का उद्देश्य अथवा उसमें व्यक्त लेखक के विचार परोक्ष रूप में कार्यशील रहते हैं।

मणि मधुकरजी ने अपने "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास में अनेक समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। हर एक आदमी का अपना देश होता है और अपने देश के प्रति अपनी भावनाओं, आशा-आकांक्षाओं को संजोये रखना हर एक का अपना परम कर्तव्य होता

है। लेखक का जन्म राजस्थान में हुआ है। भारत-पाकिस्तान विभाजन तथा अकाल जैसी भयावह परिस्थिति के कारण राजस्थान का जीवन टूट चुका था। इस परिवेश तथा जन-जीवन का चित्रण करना लेखक का प्रथम उद्देश्य रहा है। लेखक पाठक से कहता है - " आपका और मेरा "देस" ऐसी कितनी ही अंधेरी अबादियों से भरा पड़ा है, जिनमें लोग एक गैरमुल्की जिन्दगी जीने के अपमान-भरे अहसास के साथ स्वयं को ढो रहे हैं। " पत्तों की बिरादरी " का जन्म इसी तीखे अहसास से हुआ।"[२] इस उक्ति के अनुसार उजड़ते-बसते, अकाल-पीड़ित विवश लोगों के सिवा राजस्थान के आँचल का चित्रण लेखक ने बड़ी खूबी से किया है। प्रस्तुत उपन्यास लिखने के पीछे लेखक के कई उद्देश्य रहे हैं जो निम्न प्रकार हैं --

५:१ राजस्थानी जन-जीवन पर प्रकाश डालना -

राजस्थानी जन-जीवन के अन्तर्गत लेखक ने वहाँ का परिवेश, जन-जीवन, रूढ़ि-परंपराएँ, अंधश्रध्दा, संस्कृति आदि बातों का विवेचन किया है।

५:१:१ परिवेश -

लेखक ने राजस्थान के परिवेश का चित्रण इस ढंग से किया है, मानो उपन्यास पढ़ते समय पाठक को लगता है कि हम खुद वहाँ अपना गुजारा कर रहे हैं। सारे मुलुक में अकाल फैला हुआ है। मनुष्य के लिए पीने के पानी का कहीं ठिकाना नहीं है। कही भी हरियाली नजर नहीं आती। सिर्फ टीलों के बीच सरकण्डे तथा कंटीले, काँटेदार वनस्पतियों के जंगल फैले हुए हैं। दूर-दूर तक रेत के भूरे-भूरे टीले फैले हुए हैं। इस फैली रेत के कारण तथा अर्थाभाव के कारण उस प्रदेश में सड़कों का कहीं

ठिकाना नहीं है। सामान को एक जगह से दूसरी जगह पर पहूँचाने का काम ऊँट द्वारा किया जाता है। भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए शिबिर लगाएँ। वहाँ शुबो आ जाता है। इस शिबीर में कोई दस-एक कैंप मौजूद थे। जिस कैंप में शुबो को भरती मिलती है। उसे "छतना कैंप" कहा जाता है। बीच में तल्ली का मैदान फैला हुआ है। चारो ओर टीले, पेड़ और थूहर-सरकण्डे के जंगल-झाड़ दिखाई देते हैं। लोग दिनभर काम करते हैं। दिनभर कामकेबदले में दो वक्त का खाना उसके नसीब में होता था। हवा इतनी गरम थी कि आदमी पसीने से लतपथ हो जाता था। इस सन्दर्भ में लेखक का वक्तव्य दृष्टव्य है - " लूओं की सनसनी इन दिनों बढ़ गयी थी। जब्बर झाफोड़े चल रहे थे। बालू भड़भूँजे के भाड़ की तरह भभकती रहती थी। बिना पगरखी के जमीन पर पाँव टेकना कठिन था। रेत के टूह रात में भी तपते रहते थे।"[3] तथा जब जमाल की बीनणी प्रसूत होती है तब उसकी सेवा-टहल करनेवाली फुलकी " माथेपर ओढ़णी का पल्लू रगड़ती हुई छपरे से बाहर निकलती है।"[4] इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि वहाँ कितनी उमस थी।

जब बारिश होती है तब कैंप टूटने लगते हैं। लोग रोजी-रोटी की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह जा रहे हैं। इसमें शुबो और उसकी पत्नी जुगनी भी शामिल है। बारिश होने पर जो खुशिहाली पैदा हुई है, इसका चित्रण लेखक ने बारिकी से किया है - "फुहार झर रही थी। लाल-लाल बहूटियाँ बालू में रेंग रही थीं। कहीं-कहीं, बाजरे के पौधों पर चढ़ते हुए कुँकू की भाँति, धूप के चौधो चमक रहे थे।"[5]

आगे चलकर शुबो अपने साथियों के साथ भारत-पाकिस्तान की सरहद्द पर अपना घर बसाता है। वहाँ आज भी करला, जेठबाई, साँगड़, तीलबसी आदि ढाणियों के साथ "शुबो की ढाणी" भी बसी हुई है। सरकारी कागज-पत्रों में भी अब यही नाम दर्ज होगया है। इस प्रकार लेखाक ने राजस्थान के परिवेश को अपनी लेखानी से "पत्तों की बिरादरी" में उद्घृत किया है।

५:१:२ राजस्थानी जन-जीवन -

भारत विभाजन एक मानवीय त्रासदी है। देश का विभाजन हुआ, परिवार विभक्त हों गये, परिणाम स्वरूप मनुष्य चरित्रा का कुरतम पक्ष देखाने को मिल रहा है। आगजनी, जातीय दैगे आदि घटनाओं से जनता त्रस्त है। अकाल ने पूरे राजस्थान के परिवेश तथा जन-जीवन को घेर लिया है। परिवारों में बिखराव आ गया है। लोग रोजी-रोटी की तलाश में जहाँ-तहाँ घुम रहे हैं। सरकार ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए कैंप लगाएँ। उसमें लोग भरती हो गए हैं। वहाँ पर पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल, रावता जैसे स्वार्थांध लोग सरकार के दलाल मौजूद हैं। वे शोषितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके अन्याय-अत्याचार के उत्पात से आम जनता त्रस्त है। लोगों का पूरा जीवन बिखरा हुआ जान पड़ता है। कैंप में रावता जैसे खुँखार नरपशु मौजूद हैं, जो इन्सानियत को भूलकर अमानवीयता पर उतर आएँ हैं। आम जनता इन शोषक स्वार्थांधा लोगों के हाथों पालतू कुत्ते की जिंदगी जी रही है। स्त्री को तो सिर्फ अपनी हवस का शिकार समझा जाता है। इग्यारसीलाल अपनी कामांधाता की नशा में तर्रर है। वह हर एक स्त्री के साथ शारिरीक सम्बन्ध रखना चाहता है। वह इन्सानियत को भूलकर अमानवीयता पर उतर आया है। इस अन्या-अत्याचार को

सहकर भी लोगों की अपनी दिनचर्या है। लोग दिनभर काम करते हैं। उसके बदले में उन्हें दो वक्त का खाना मिलता है। लेखक के शब्दों में - " कम्प सोने जा रहा था। स्त्रियाँ बच्चों को थपक रही थीं। उन्हें झींडिये और लक्खी बिणजारे की कहानियाँ सुना रही थीं। मरद हुक्कों की नाल, तम्बाकू के ताव और बातों "उलझान में मशगूल थे।"[6] अशिक्षा तथा अविचार के कारण लोग छोटी-छोटी बातों पर गालियाँ सुनाते हैं, आपस में झगड़ा करते हैं। पूरा समाज अन्याय-अत्याचार, रूढि-परंपरा से ग्रस्त है। लोग शुभ घड़ी के अवसरपर ढोल बजाकर तथा गुड़ बाँटकर अपना आनंद मनाते हैं। जरख के उत्पात से बचने के लिए पीपे और तसले पीटे जाते हैं। लोग लाठियों को लेकर कैंप की रखवाली करते हैं। इसप्रकार लेखक ने विवेच्य उपन्यास में राजस्थान के जन-जीवन का चित्रण किया है।

५:१:३ अशिक्षा तथा अंधश्रध्दा -

हमारे देश में करीब-करीब साठ प्रतिशत जनता अशिक्षित है। अशिक्षा के कारण लोग अंधश्रध्दा से ग्रस्त हैं। अंध-श्रध्दा समाज में फैली हुई वह मारामारी है जिसका कोई इलाज नहीं। आज-कल इन्सान विज्ञान के बलपर यश की चोटी पर पहुँच चुका है। लेकिन अंधश्रध्दा है कि उसकी पीठ छोड़ती नहीं। आज भी अंधश्रध्दा हमारे समाज में मौजूद है। विज्ञान तथा साहित्य को आधार मानकर अंधश्रध्दा की गहरी पकड़ मानव के मन-मस्तिष्क से धीरे-धीरे कम होती जा रही है। स्वतंत्र भारत तथा उसके पूर्व का समाज अंधश्रध्दा से ग्रस्त था। लेखक ने राजस्थान के जनजीवन में जो अंधश्रध्दा जैसी कुप्रथाएँ मौजूद थी उसका प्रस्तुत उपन्यास में चित्रण किया है। रावता, इग्यारसीलाल तथा पुष्पा-

बाई का कहना है कि तालाब की खुदाई के लिए मिनख की बलि देना जरूरी है। इसमें अंधश्रध्दा ही निहित है। वे बड़ी क्रूरता के साथ बाशिया का खून करके तालाब के किनारे मिट्टी में गाड़ देते हैं। समाज में जादू-टोना, जंतर-मंतर, सगून लेना आदि कुप्रथाएँ मौजूद थी। इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है -- " सात चिकने रंगीन पत्थर इकट्ठे कर बाशिया सगुन ले रहा था। यह विदया उसने गोदारी से सीखी थी। जब विपदा आये, पत्थरों की बात सुनो वह उन्हें हवा में उछाल रहा था पत्थर अक्कास की बानी पकड़ लेते हैं और भविस-काल का हाल-हवाल बता देते हैं।"[७] भूत-पिशाच्य के नाम से लोग डरते हैं। आज विज्ञान ने साबित कर दिखाया है कि भूत-प्रेत नहीं है। फिर भी आदमी है कि उसके अस्तित्व को नकारता ही नहीं। उपन्यास में चित्रित थानेदार एक जबाबदार पुलिस ऑफिसर होते हुए भी जिन्न के नाम से डरता है। पुष्पाबाई तथा रावता रात में देखे सपने को सच मानते हैं।

अशिक्षा के कारण समाज में जातिवाद फैल चुका है। जातिवाद के नामपर हजारों लोग मौत के घाट उतार दिये गए। प्रस्तुत उपन्यास में जातिवाद का उदाहरण दृष्टव्य है। एक जमीनदार ने भाँभी जाति की स्त्री पर अन्याय-अत्याचार किया। वह स्त्री जुगनी से कहती है - " दुरभिक्ख के कारण मैं रूजगार की खोज में गयी थी वहाँ। जम्मेंदार की बाड़ी में काम करती थी। एक रोज उसकी घरवाली ने मेरी जात पूछी। मैंने कहा-भाँबी हूँ। वह बिगड गयी, बकने लगी - तूने पहले क्यों नहीं बताया, खसमखाणी। तूने हमारा धरम भरस्ट कर दिया। जब ..... जम्मेंदार को मालूम पड़ा तो उसने अपने चाकरों से बोल दिया फेंक दो राँड को आग में। बस उन्होंने फूस जलाकर मुझे उसमें धकेल दिया। कई बार धकेला और निकाला।"[८]

लेखक ने राजस्थान का परिवेश, जन-जीवन तथा उसमें स्थित अशिक्षा और अंधश्रध्दा का चित्रण किया है। लेखक का इस सम्बन्ध में अनुभव बड़ा है। उन्होंने यथार्थ को अपनी कलम से कागज पर उतारा है।

५:२ भारत - पाकिस्तान बँटवारे के दुष्परिणामों का चित्रण -

भारत-पाकिस्तान विभाजन यह घटना सैध्दान्तिक रूप से राजनैतिक है तो व्यावहारिक रूप से निश्चय ही सांप्रदायिक थी। परिणाम स्वरूप एकत्र परिवार विभक्त हो गये। लोग बेघर हो गये। जातिवाद, दंगा-फसाद, अन्याय-अत्याचार, भ्रष्टाचार, आगजनी आदि घटनाओं का सिलसिला जारी रहा। इन घटनाओं के कारण लोगों को बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। सरहद्द पर रहनेवाले लोग भारत तथा पाकिस्तान के आश्रय में निकल पड़े। उन्हें न खाने के लिए खाना मिल रहा था न पीने के लिए पानी। कई लोगों को यह तक मालूम न था कि भारत और पाकिस्तान की सरहद्द कहाँ से शुरू होती है और कहाँ खात्म होती है। स्त्रियों पर अन्याय-अत्याचार, बलात्कार होते रहे। उसे सिर्फ भोग्या समझा जाने लगा। भारत-पाकिस्तान विभाजन से जो समस्याएँ निर्मित होती हैं उसका चित्रण लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में किया है। इनमें मुलक समस्या तथा नारी समस्या प्रभावकारी है।

५:२:१ मुलुक समस्या -

हिन्दुस्थान का विभाजन हो गया है। दोनों देशों के बीच सीमा रेखा खींची गई। हिन्दुस्थान बरबाद हो गया। भारत सरकार ने सरहद्द पर भटके लोगों के लिए सहायता शिबिर लगाईं। उस शिबिर

में रावता, ईग्यारसीलाल जैसे खूँखार, अन्याय-अत्याचारी नरपशु मौजूद थे। तो पाकिस्तान में जाति-पाँति का आडम्बर सामने रखकर लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सरहद्द पर स्थित गाँव-बस्तियाँ उजड़ गयी है। लोगों की स्थिति आगे शेर पीछे कुआँ की तरह हुअी है। उन्हें न रहने के लिए जगह मिल रहीं है न पहनने के लिए कपड़ा। इन मासूम जिंदगी जी रहे लोगों को यह तक मालूम न था कि भारत तथा पाकिस्तान की सीमा कहाँ से शुरू होती है और कहाँ खत्म होती है। लेखाक ने मुलुक-समस्या को तथा उसके दुष्परिणामों को अपने प्रस्तुत उपन्यास में प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

५:२:२ नारी समस्या -

हमारे समाज में नारी विविधा रूपों में उभर आयी है। प्रसादजी नारी को संबोधित करते हुए कहते है। - " नारी तुम केवल श्रध्दा हो।" नारी मानव को सश की चोटी तक पहुँचा सकती है और उसके मार्ग में बाधा भी बन सकती है। लेकिन भारत विभाजन के समय वह परिस्थिति के सामने लाचार विवश बन गयी है। जीवन की रेल चलाने के लिए स्त्री-पुरूष इन दो पहियों का समान स्थान है। लेकिन स्त्री को हेय्य माना जाता है। नारी को हमारी संस्कृति ने श्रध्येय माना है। उसे अपने जीवन-साथी की जरूरत होती है। उसका पति लूला-लंगडा ही क्यों न हो, लेकिन स्त्री के जीवन में पुरूष का स्थान महत्वपूर्ण है। यदि उसके सर पर से पुरूष का छत्र नष्ट हो गया तो उस स्त्री को घिनौनी नजर से देखा जाता है। भारत विभाजन हो चुका है। इस दौरान आगजनी, दंगा-फसाद जातिय-दंगे आदि घटनाओं ने जोर पकडा। बहुत से मासूम लोग मारे गए। इस कारण अनेक बहू-बेटियाँ विधवा हो गयीं। उनके सर पर जो छत्र था वह नष्ट हो गया। स्त्रियाँ रोजी-रोटी की तलाश में

इधर-उधर भटकने लगी। बिना पति के स्त्री को हेय्य दृष्टि से देखा जाने लगा। स्त्रियों पर अन्याय-अत्याचार, बलात्कार आदि कृत्कृत्य होने लगे। भारत सरकार ने लोगों की सहायता के लिए कैंप लगाएँ। उसमें जो शासक थे वे स्त्रियों को वासनाजन्य दृष्टि से देखने लगे। इसका उदाहरण दृष्टव्य है। तुवटी शुबो से कहती है - " काम-वाम की किसको परवा है ? जिसके साथ जवान लुगाई हो, इग्यारसीलाल उसी को इस कॅम्फ में रखता है। ..... तुम अक्केले हो। तुमको खामखाँ क्यों टिक्कड डालेगा वो ? उसको क्या फायदा ?"[९] इग्यारसीलाल जैसे शासक स्त्रियों को अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने के लिए मजबूर किया करते थे। बँटवारे के कारण स्त्रियों को अन्याय-अत्याचार, बलात्कार आदि अमानवीय अकृत्यों को सहना पड़ा। इस माने नारी समस्या एक बड़ी समस्या थी। जिसका चित्रण मणि मधुकरजी ने अपने आलोच्य उपन्यास में किया है।

५:३ अकाल-पीड़ितों का चित्रण करना -

भारत-पाक के रूप में हिन्दुस्थान का विभाजन हो गया है। इस स्थिति में जातिय दंगे, आपसी कलह, आगजनी, भ्रष्टाचार आदि घटनाओं से पूरा देश अक्रांत है। ऐसी भयानक स्थिति में आगे चलकर लगभग सन १९६१-६२ के आसपास पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तान के आक्रमण का भारत ने डटकर मुकाबला किया। किन्तु बाद में राजस्थान में अकाल फैल गया। अकाल के कारण लोगों को जिन पीड़ाओं का सामना करना पड़ा उसका चित्रण लेखक ने अपने " पत्तों की बिरादरी" उपन्यास में किया है। अकाल फैल चुका है। लोग रोजी-रोटी की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं। उन्हें न खाने के लिए रोटी मिल रही है न पीने के लिए पानी। सरहद्द पर स्थित घर पहले ही बिखर गये थे। अनगिनत गाँव उजड़ गये हैं। जगह-जगह पर पानी की किल्लत महसूस होने

लगी है। अवकाश में सिर्फ सूखी हवा बेचैनी से घुमेरी लगा रही है। कहीं भी छाँव का ठिकाना नहीं। दूर-दूर तक सरकण्डे के कँटीले काँटेदार वनस्पतियों के जंगल फैले हुए दिखाई देते है। भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए सहायता शिबिर लगाएँ। जहाँ अकाल से पीड़ित लोग उनकी पनाह में रहते हैं। शिबिर लोगों से भरे हुए हैं। वहाँ पैर रखने के लिए भी जगह खाली नहीं है। शुबो भी आम जनता की तरह कैंप में आ जाता है। वह देरी से आनेवाले में था। पहले उसे कैंप में भरती नहीं किया जाता किन्तु बाद में बछराज को शुबो पर दया आती है और वह उसे कैंप में भरती करवाता है। शुबो जिस कैंप में भरती हो गया है उसे " छतना कैंप"कहते है। अकाल-पीड़ितों का चित्रण करने के लिए लेखक ने प्रमुख रूप से भूख - समस्या को अपनाया है जो इस प्रकार है -

५:३:१ भूख: समस्या -

भूख इन्सान को पालतू बनाती है। वहशी कुत्ता तक भूख की आग मे पालतू बन जाता है, तो इन्सान की क्या कीमत। शुबो अपने माँ-बाप को लेकर भारत सरकार ने लगवाये सहायता शिबिर की ओर आ रहा था। उसका चलना अविरत था। भूख की वजह से उसकी माँ अपना दम तोड़ देती है। शुबो के माँ की आखरी इच्छा थी कि एक ताजा सिंकी हुई रोटी खायें। लेकिन शुबो उसे रोटी तो क्या पानी तक पिला न सका। परिस्थिति ने उसे बेबस, मजबूर बना दिया है। सुरक्षितता की आखरी मोड़पर प्यास के कारण उसके पिता अपने प्राण त्यज देते हैं। कैंप में स्थित लोगों को दिनभर पसीने से लतपथ होने तक काम करने पर दो वक्त का रूठा खाना नसीब होता था, तो दूसरी ओर पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल रावता जैसे पूँजीपतियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले लोग ऐशोआराम की जिंदगी जी रहे हैं। एक जगह पर लेखक ने

भूख को लेकर लिखा है - " दुरभिक्ख! बूँद-बूँद पानी के लिए तरसनाऔर दाने-दाने के लिए बिलखना-भटकना। मनुष्यों और मवेशियों की लाशों के बियाबान में उतरते-डूबते हुए वे दिन और रात। मृत्यु और मृत्यु और मृत्यु से भी ज्यादा उसका नंगा भय। इस भय ने शुबो को एकदम निहत्था बना दिया था।"[१०]

कैंप टूट रहे थे, भूख से बेहाल लोग इधर-उधर भटक रहे हैं। अपनी भूख को मिटाने के लिए आदमी कुछ भी कर सकता है। इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है - कुछ भूखे लोग रात में पुष्पाबाई तथा इग्यारसीलाल को मारकर उनके पास जो खाने की चीजे मौजूद थी उसे लूटते हैं। पुष्पाबाई का जान से प्यारा "बक्सा" अपनी जगह पर मौजूद था। कैंप टूटने से भूक्खडों की तादात बढ़ गयी है। झुण्ड के झुण्ड लोग इधर-उधर भटक रहे है। भूख से बेहाल लोग खेजड़ो-पेड़ों की छाल तक उतारकर-पीसकर खा रहे हैं। ऐसी दर्दनाक भूख की स्थिति का चित्रण लेखक ने विवेच्य उपन्यास में किया है।

५:४ राजनीतिक अव्यवस्था का पर्दाफाश -

हमारे देश को आजादी मिली। देश की आजादी के लिए अनेक नवयुवकों, नेताओं तथा स्त्रियों ने तक अपना आत्मबलिदान दे दिया। बहुत से प्रयासों के बाद हमारा देश अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त हो गया। भारत में गणतंत्र आ गया। आजादी से पहले लोगों ने स्वतंत्र भारत के सपने अपने मन में संजोये रखे थे। उनकी धारणा थी कि अजादी मिलने पर हम चैन की नींद सोयेंगे। हमारे देश में जो कुछ है हमारा अपना होगा। उसपर अपना अधिकार होगा। लेकिन राजनीतिक अव्यवस्था, स्वार्थांध राजनेता, भ्रष्टाचारी पुलिस अधिकारी तथा गैरजिम्मेदार अधिकारियों के

कारण इससे विपरीत ही हुआ। राजनेता अपने स्वार्थ के लिए दंगा-फसाद, भ्रष्टाचार, मार-काट जैसे काले-कारनामें करवाते रहें। जगह-जगह, स्थान-स्थान पर भ्रष्टाचार फैल चुका। पुलिस आम जनता पर अन्याय-अत्याचार करती रहीं। हमारे देश के नौजवान बेरोजगारीकेआग में जुलसने लगे। उन्होंने शराब, तमाकू, शिगार आदि चीजों का सहारा ले लिया। जिम्मेदार वरिष्ठ अधिकारी भ्रष्टाचार करते रहे। तात्पर्य देश का नक्शा ही उलटा हो गया। राजनीतिक अव्यवस्था के कारण हमारा देश लूला-लंगडा हो गया। इसका लेखक ने आलोच्य उपन्यास में चित्रण करते हुए राजनीतिक अव्यवस्था का पर्दाफाश किया है।

५:४:१ भ्रष्टाचार -

आज के समाज में भ्रष्टाचार की जड़े इतनी दूर-दूर तक फैल गयी हैं कि उन्हें उखाड़कर फेंक देना बड़ा मुश्किलकार्य है। भ्रष्टाचार राजनीति, सरकारी कार्यालयों, अस्पतालों कहीं भीदेखो ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं जहाँ भ्रष्टाचार दिखाई नहीं देता। शिक्षा क्षेत्र जो निर्मल, पावन समझा जाता है, भ्रष्टाचार की जड़े फैल चुकी हैं। राजनीतिक अव्यवस्था के कारण भ्रष्टाचार फैल रहा है। इसका यथार्थ चित्रण लेखक ने अपने आलोच्य उपन्यास में किया है। भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए सहायता शिबिर लगवाये। वहाँ इग्यारसीलाल, रावता तथा पुष्पाबाई जैसे सरकार के दलाल मौजूद है। वे कैंप के लोगों को भेजा अनाज चोर-डाकूओं को बेचकर रक्कम ऐंठ लेते है। इन पैसों से वे ऐशोआराम की जिंदगी जिना चाहते है। शुबो उससे आवेश में आ जाता है। उसे इग्यारसीलाल आवेश में आने की वजह पूछता है। तब शुबो कहता है - " बमके नहीं तो क्या करे आदमी बताओं। कैसा जाल-जंजाल है शाशुरा

..... कम्फ में भरती होंगे, कुल तीन बीसी लोग, लेकिन कागदों में चिपका रखे हैं दो सौ से ज्यादा। मुझे मालूम नहीं है क्या ? अनाज तो बचेगा ही, बस उसका सौदा कर रकम ऐंठ ली जाती है। यह फरजी-धरजी कारे-वाई अच्छी नहीं है, ध्यान कर लो।"[११] एक दिन हरलो डाकू और शुबो के बीच हातापाई हो जाती है। उसमें हरलो की हार होती है। उसे पूछने पर वह पुष्पाबाई तथा इग्यारसीलाल की काली-करतूतों का पर्दाफाश करता है। इसप्रकार राजनीतिक अव्यवस्था के कारण भ्रष्टाचार फैला हुआ है। इसका चित्र लेखक ने खींचा है।

५:४:२ राजनेताओं पर व्यंग्य -

राजनेता सर्वगुण संपन्न होना चाहिए। उसे अपने देश की बागडोर सँभालनी होती है। आम जनता राजनेता को अपना प्रतिनिधी देश का सर्वेसर्वा घोषित करती है। आजकल कुछ राजनेताओं में बदलाव आ गया है। वे सिर्फ अपनी कुर्सी कायम रखना चाहते हैं। उन्हें जनता की जरा भी परवा नहीं है। वे सामाजिक कार्यों में भ्रष्टाचार कराते है। कभी-कभी तो कानून तक अपने हाथ में ले लेते हैं। नेता मंडली गुण्ड पालकर, उनसे जनता को धमकाकर वोट हासिल करते हैं। और चुनाव जितते हैं। कुछ नेता तो अनेक स्त्रियों के साथ अपना शारीरिक सम्बन्ध रखाते हैं तथा शराब पीकर मस्तानी लूटते हैं। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में कुछ उदाहरणों द्वारा राजनेताओं पर परारा व्यंग्य किया है। बदरू मियाँ बॅ. जिन्ना पर सक्त नाराज है। उसका कहना है कि जिन्ना ने प्रधानमंत्री का स्थान पाने के लिए भारत-विभाजन करवाया। राजनेता धनदौलत तथा अपने बल का इस्तेमाल कर वोटरों को खरीद लेते हैं। उन्हें धमकाकर-फूसलाकर अपनी कुर्सी कायम रखते है। पुष्पाबाई एम.पी.,एम.एल.ए. बनना चाहती

है। उसे राजनीति में खून करनेवाला आदमी चाहिए।

राजनेता जैतपालसिंग का पुष्पाबाई के साथ नाजायज सम्बन्ध है। जब कुछ नकसली लोगों द्वारा जैतपालसिंग का खून होता है तब पुष्पाबाई कहती है -- " वो नकसली-उकसली लोग थे। अच्छा हुआ। नेता बनके अकड़ता फिरता था मेरा जैतपालसिंग। हकूमत सिर में बोलने लगी थी। मुझासे बोला, अभी तुम कैम्प में जाके रहो और कुछ कमाई-धमाई कर लो, फिर पोलटिकीस करना। अरे, मुझे सब मालूम है, उसको कोई और मिल गयी थी। वही भोपालवाली बेगम साईबा .... रॉड होगी, और क्या!"[१२] इससे तात्पर्य निकलता है कि राजनेता जैतपालसिंग के अनेक स्त्रियों के साथ सम्बन्ध दिखाई देते हैं। थानेदार एक जिम्मेदार पुलिस ऑफिसर है। उसका राजनेताओं के बारे में कहना है कि "राजनेता सब फोकटिये होते हैं। चुनाव का वक्त आता है तो मेरी पतलून में हाथ डालते लगते हैं, चन्दा माँगते हैं। मैं मदद करता हूँ उनकी।"[१३] इसप्रकार लेखक ने राजनेताओं पर करारा व्यंग्य कर है।

५:४:३ पुलिस पर व्यंग्य -

पुलिस जनता की सेवक तथा रक्षक होती है, लेकिन हमारे देश की पुलिस भक्षक बनी हुई दिखाई देती है। पाश्चात्य देशों में लोग पुलिस को अपना दोस्त समझाते हैं। लेकिन अपने देश में पुलिस को निर्दयी, लालची, भ्रष्टाचारी आदि कुप्रवृत्तियों से संबोधित किया जाता है। और इसकी वजह है पुलिसनेलोगों के साथ किया हुआ दुर्व्यवहार तथा उनपर किया हुआ अन्याय-अत्याचार। प्रस्तुत उपन्यास में कुछ बातों की माध्यम से लेखक ने पुलिस की खिल्ली उडायी है। पुलिस के अन्याय-अत्याचार से लोग

आतंकित है, इसलिए तो लोग पुलिस के सामने आने से डरते हैं।

आदमी जन्मत: स्वार्थी होता है। कोई कदम उठाने के पीछे उसमें उसका स्वार्थ निश्चित होता है। लेकिन उसकी मात्रा कम या ज्यादह हो सकती है। पुलिस की दरमहा तन्खवा इतनी नहीं होती कि जो ऐशोआराम की जिन्दगी जी सके। स्वभावत: उनका लालच बढ़ जाता है। इसमें राजनीतिक अव्यवस्था का अंग भी मौजुद है। पुलिस का लालच इग्यारसीलाल तथा पुष्पाबाई के संवाद से दिखाई देता है -

" यह थानेदार तो बड़ा बकबकिया है।"

" टुकड़ा डाल दिया ?"

" हाँ, लेकिन लालच देखो इसका - इत्ते सिपाही घेरकर ले आया है। सबके हाथ में कुछ-न-कुछ तो देना ही पड़ेगा।"[१४]

पुलिस अशिक्षित तथा बेबस जनता को चिकनी-चुपडी बाते बताकर अपने जाल-जंजाल में फँसाती है। और गुन्हेगारों से रिश्वत लेकर उन्हें छोड़ देती है। उपन्यास में चित्रित थानेदार एक जिम्मेदार पुलिस अफ्सर है। पुलिस को हिम्मत तथा ढाढ़स के साथ काम करना चाहिए, उसे किसी बात का डर नहीं होना चाहिए। लेकिन थानेदार जिन्न के नाम से ही बहुत डरता है। इससे तात्पर्य निकलता है कि पुलिस अफ्सरों के चुनाव में गिरावट आ गयी है। थानेदार पुष्पाबाई तथा इग्यारसीलाल से रक्कम ऐंठ लेता है। पुलिस की कुप्रवृत्तियों पर लेखक ने प्रकाश डाला है। पुलिस लोग ऐशोआराम की जिंदगी जीना चाहते हैं। शराब पीकर शराब की बोतलें खाली कर देते हैं। थानेदार कैंप के लोगों अपनीरंगीन कहानियाँ बताता है। पुलिस औरत का स्वाद लेना अपने को स्वर्ग की प्राप्ति हो गयी समझाते है। लेखाक के शब्दो में - "सिपाही मायूस होकर पलट पड़े। उनके लिए कम्प के दौरे का मतलब था, बढिया भोजन और औरत का स्वाद। भोजन से

तो मन तिरपत हो गया, लेकिन औरत से तन का तिरपन होना बाकी था। वे लार सुकड़ते हुए रात का इन्तजार कर रहे थे और तब तक अपने लिए औरतें ढूँढ-चीन्ह रहे थे।"१५

लेखक ने पुलिस की स्वार्थांधता, डरपोक वृत्ति तथा स्त्री-लोलुपता पर प्रकाश डालकर उनपर करारा व्यंग्य किया है।

५.४:४ डकैत की समस्या -

इन्सान की तीन महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक जरूरतें है, रोटी, कपड़ा और मकान। उसका जीवन इन आवश्यकताओं की अभाव में अधूरा है। वर्तमान युग में समाज के दो वर्ग है - गरीब और अमीर। अमीर अधिक अमीर होता जा रहा है, और गरीब अपनी गरीबी की आग में झुलसता है। क्या गरीब होना पाप है ? वह परिस्थिति की प्रतिकूल अवस्था में बेबस और लाचार बनता है। लेकिन रोटी के लिए वह क्या कुछ नहीं कर सकता। वह कुछ भी कर सकता है। हर-एक आदमी ऐशो-आराम की जिंदगी जीना चाहता है। गरीब अराम की जिंदगी तो क्या, दो वक्त का खाना तक खा नहीं सकता। आजकल बेरोजगार की स्थिति बढ़ती जा रही है। परिणाम स्वरूप हमारे देश के नवयुवक नौकरी तथा रोजी-रोटी की तलाश में भटक रहें हैं। सरकार के ठेकेदारों से ठोकरे खानेपर वे चोरी, डकैत जैसे कुमार्ग पर निकल पड़ते हैं। भूख आदमी को पालतू कुत्ता बना लेती है, कई बार इन्सान शेर तक बन जाता है। उपन्यास में स्थित कुछ भुक्खड़ लोग पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल की पिटाई कर खाने की चीजे भगा ले जाते हैं।

कुछ लोग अविचार तथा ऐशोआराम की जिंदगी जीने की

इच्छापूर्ति के लिए डकैत की ओर झुक जाते हैं। इसका उदाहरण द्रष्टव्य है - उम्मरकोट वाले लोग तथा हरलो डाकू की टोली। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में डकैत की समस्या पर प्रकाश डाला है। इसके लिए भी राजनीतिक अव्यवस्था ही जिम्मेदार है।

लेखक ने आलोच्य उपन्यास में राजनीतिक अव्यवस्था पर प्रकाश डालने हेतु भ्रष्टाचार, डकैत की समस्या तथा इसके साथ-साथ राजनेता तथा पुलिस पर व्यंग्य किया है।

५:५ स्त्री-पुरूषों के अन्तर्बाह्य सम्बन्धों को परखना -

मणि मधुकरजी ने "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास में विभिन्न युगलों की स्थापना कर स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध रूपों को उजागर करने का प्रयास किया है। उन्होंने स्त्री-पुरूष के सामाजिक, यौन तथा पारिवारिक सम्बन्धों को आलोच्य उपन्यास में उद्घटित किया है। लेखक का मुख्य उद्देश्य के साथ-साथ स्त्री-पुरूषों के अन्तर्बाह्य सम्बन्धों को परखना भी एक उद्देश्य रहा है। उन्होंने शुबो, जुगनी, इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता, अचली, सुवटी आदि पात्रों के माध्यम से इस उद्देश्य की पूर्ति की है। इन्सान के मन-मस्तिष्क के दो पक्ष होते हैं। अन्तर्पक्ष और बाह्यपक्ष। इसके आधार पर हम स्त्री-पुरूष सम्बन्धों का विवेचन करेंगे --

शुबो प्रस्तुत उपन्यास का नायक भावुक पात्र है। वह जुगनी को सच्चे दिल से प्यार करता है। उसने जब जुगनी को पहली बार देखा तब उसे जुगनी अपनी माँ के समान प्रतित होती है। लेखक के शब्दों में -- " जुगनी हथेली पर बाटी तोड़कर छोटे-छोटे कौर बना रही थी।

शुबों को उसका चेहरा अपनी माँ से मिलता-जुलता और वैसा ही ममतालु लगा।"[१६] शुबो सहृदय है। जब बीणानी प्रसूत होने जा रही थी तब उसकी चीख कराहटे ले रही थी, उस वक्त शुबो का गला सूखकर तड़कने लगा था। वह सुवटी के साथ अपना सम्बन्ध रखने को नकारता है। शुबो बाहर से कठोर है, लेकिन अन्दर से भावुक और सहृदय है।

जुगनी शुबो से जी जान से प्यार करती है। उसे अपना पति स्वीकार करती है। शुबो को हमेशा समझाती रहती है। और इग्यारसीलाल का तिरस्कार करती है।

इग्यारसीलाल के दोनों पक्ष समान रूप से कार्यरत हैं। वह हर एक स्त्री के साथ अपना शारीरिक सम्बन्ध प्रस्थापित करना चाहता है। वह अहंभावी है। एक दिन शुबो कैंप के लोगों के सामने उसका अहं तोड़ डालता है। पुष्पाबाई उपरी तौर से राजनेता जैतपालसिंह से प्यार करती है, लेकिन जब जैतपालसिंग मर जाता है तो उसे कोई दुःख नहीं होता एक औपचारिकता के नात रो पड़ती है। वह दूसरे आदमी के साथ अपने सम्बन्ध रखना स्वीकार करती है। उसके जैतपालसिंग, रावता, हीरानंद आदि परपुरुषों के साथ सम्बन्ध दिखाई देते हैं।

सुवटी एक मनोविकृत पात्र है। वह सिर्फ भोग-विलास तथा आराम की जिंदगी जीना चाहती है। उसके इग्यारसीलाल, हरलो आदि पुरुषों के साथ सम्बन्ध दिखाई देते हैं। वह शुबो को भी अपने जाल में फँसाना चाहती है। मगर शुबो इन्कार करता है। सुवटी का कहना है कि - " ऐसा पुष्पाबाई में क्या है, जो मुझमें नहीं। वह हम पर क्यों राज करे।

अचली ठेकेदार बहराज से प्यार करती है। दोनों शादी-

ब्याह में बँध जात हैं। लेकिन किसी कारणावश अचली अपनी गर्भावस्था की स्थिति में किसी दीने नामक पराये मर्द के साथ भाग जाना पड़ता है। परिस्थिति से मजबूर अचली अनेक पुरुषों के साथ सम्बन्ध रखती है। वह दिल की साफ है। इग्यारसीलाल की हवस का शिकार होते अपनी बेटी जुगनी को बचाने के लिए वह अपने-आप को उसके स्वाधीन हो जाती है।

लेखक ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से स्त्री-पुरुषों के अन्तर्बाह्य सम्बन्धों को परखने का प्रयास किया है।

५:६ प्रेम के विविध पहलुओं का चित्रण -

प्रस्तुत उपन्यास में मणि मधुकरजी ने अनेक घटनाओं तथा पात्रों के आपसी व्यवहार के माध्यम से प्रेम के विविध पहलूओं का चित्रण किया है; जिसमें आदर्श प्रेम, स्वार्थी प्रेम, वासनाजन्य प्रेम आदि प्रेम के रूपों का चित्रण किया जा सकता है।

५:६:१ आदर्श प्रेम -

शुबो और जुगनी उपन्यास के नायक-नायिका हैं।उनका प्रेम आदर्श प्रेम कहा जा सकता है। आदर्श प्रेम में त्याग की भावना निहित होती है। उस प्रेम में स्वार्थ को तथा वासना को कोई स्थान नहीं रहता। शुबो और जुगनी के व्यक्तित्व में त्याग भावना कूटकर भरी हुई है। अत: दोनों आदर्श प्रेमी हैं। जब शुबो पहली बार जुगनी को देखता है, तब उसे जुगनी में अपनी माँ की प्रतिमा दिखाई देती है। शुबो को हरलो डाकू पकड़ ले जाता है, उस वक्त जुगनी उसकी याद करते हुए

जिन्दा रहती है, तथा शुबो भी जुगनी को याद करते हुए पुरे ढाढ़स के साथ जुल्म तथा अन्याय-अत्याचार को सहकर वापर लौट आता है। अत: शुबो और जुगनी के बीच जो प्यार है वह आदर्श प्रेम है। इस विवेचन के साथ-साथ अचली का अपनी बेटी जुगनी के प्रति और गोदारी का अपना बेटा बाशिया के प्रति जो प्यार है, उसमें आदर्श प्रेम की झांकी दिखाई देती है। अचली अपनी बेटी को इग्यारसीलाल की बुरी नजर से बचाने के लिए अपने-आप को उसके स्वाधीन कर देती है। और गोदारी तो अपने बेटे के गम में पागल हो जाती है। इसप्रकार लेखक ने आदर्श प्रेम को प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है।

५:६:२ स्वार्थी प्रेम -

प्रस्तुत उपन्यास में कुछ घटनाओं के माध्यम से स्वार्थी प्रेम को उजागर किया है। पुष्पाबाई और राजनेता जैतपालसिंग के बीच प्रेम सम्बन्ध हैं पुष्पाबाई जैतपालसिंग के सम्बन्ध रखाती है और वह मंत्री बनने की चाह रखती है। राजनेता जैतपालसिंग उसे अकाल-पीड़ित लोगों के कैम्प की मुखियाँ बनाता है। सब जानते थे कि ये कैम्प सोना उगलते हैं। एक दिन राजनेता जैतपालसिंग का नहाते वक्त कुछ नक्सलियों ने खून किया। यह समाचार पुष्पाबाई को पहुँचाया, तब पुष्पाबाई संदेशा पाकर कहती है - " वो नकसली-उकसली लोग थे। अच्छा हुआ। नेता बनके अकड़ता फिरता था मेरा जैतपालसिंग। हकूमत सिर में बोलने लगी थी। मुझसे बोला, अभी तुम कैम्प में जाके रहो और कुछ कमाई-धमाई कर लो, फिर पोलटिकिस करना। अरे, मुझे सब मालूम है, उसको कोई और मिल गयी थी। वही भोपालवाली बेगम साईबा .... रॉड होगी और क्या ?"[१७] पुष्पाबाई के इस वक्तव्य से उसका राजनेता जैतपालसिंग के प्रति जो स्वार्थी

प्रेम था वह दिखाई देता है। इसके साथ-साथ सुवटी और इग्यारसीलाल तथा अचली और इग्यारसीलाल के प्रेम में स्वार्थ छिपा हुआ है।

५:६:३ वासनाजन्य प्रेम -

प्रस्तुत उपन्यास का इग्यारसीलाल खलनायक है। उसकी नजर वासना से भरी हुई है। वह कैम्प की हरेक स्त्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखना चाहता है। इग्यारसीलाल के अनेक स्त्रियों के साथ सम्बन्ध दिखाई देते हैं। उसके सुवटी, अचली तथा जानकी काकी आदि स्त्रियों के साथ सम्बन्ध दिखाई देते हैं। उनके प्यार में वासना कूट-कूटकर भरी हुई है। इग्यारसीलाल अपनी बेटी समान जुगनी को तक अपनी हवस का शिकार बनाना चाहता है, मगर उसमें वह असफल रहता है। इसके साथ-साथ सुवटी और हरलो के बीच का प्यार वासनात्मक है। तथा सुवटी शबो से अपनी आग को बुझाना चाहती है। रावता और पुष्पाबाई के प्रेम में वासना भरी हुई है। लेखक ने यहाँपर वासनाजन्य प्रेम के माध्यम से पात्रों का खालीपन तथा उनकी कुप्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है।

इसप्रकार मणि मधुकरजी ने प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम के विविध पहलुओं को पाठके के सामने रखा है। और उसमें उन्हें काफी सफलता मिली है।

५:७ श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठापना -

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में कुछ घटनाओं के माध्यम से श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठापना की है। और यहीं उनका उद्देश्य रहा है।

भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए सहायता शिबीर लगवाएँ। उसमें लोग दिनभर काम करते थे। इससे आगे चलकर एक सड़क और एक तालाब की निर्मि हुई। जब कैम्प टूट जाते है तब लोग रोजी-रोटी की तलाश में अपनी-अपनी राह पकड़ लेते है। शुबो भी जुगनी को साथ लेकर अपने कुछ साथियों के साथ भारत-पाक सरहद्द पर एक ढाणी बसाता है। बड़े श्रम से आवश्यक सामग्री इकट्ठा करके एक कूटी बनाता है। वहाँपर पानी की किल्लत महसूस होती है। तब अपने साथियों को इकट्ठा करके एक पानी की विहिर खोदता है। उपन्यास के अन्त में पाकिस्तान के सिपाहियों द्वारा शुबो का अन्त होता है। तब जुगनी तिल के ताड़ सुखाती नजर आती है। वह श्रम करती है। संकेत में लेखक का श्रम मूल्य की प्रतिष्ठापना करता प्रमुख उद्देश्य रहा है।

* निष्कर्ष -

उपर्युक्त बातों को गौर से देखने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहूँचे हैं कि उपन्यासकार मणि मधुकरजी सचमुच उपन्यासकार है। क्योंकि उपन्यास में जिन महत्वपूर्ण बातों का होना आवश्यक है वे सभी बातें उनके उपन्यास में हैं। इन बातों में से उपन्यास में उद्देश्य का होना अत्यावश्यक आर महत्वपूर्ण है। मणि मधुकरजी ने अपने प्रस्तुत उपन्यास में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया है। उन्होंने राजस्थानी जन जीवन पर प्रकाश डाला है। तथा भारत पाकिस्तान बँटवारे के दुष्प-रिणामों को चित्रित किया है और अकाल-पीड़ितों का चित्रण किया है। इन मुख्य उद्देश्यों के साथ-साथ राजनीतिक अव्यवस्था का पर्दाफाश करना, स्त्री-पुरुषों के अन्तर्बाह्य सम्बन्धों को परखना, प्रेम के विविध पहलुओं

का चित्रण करना तथा श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठापना करना आदि गौण उद्देश्य रहे हैं। मणि मधुकरजी प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य की पूर्ति करने में काफी सफलता पा चुके है।

पंचम अध्याय

"पत्तों की बिरादरी' का उद्देश्य।"

१) कृष्णदेव शर्मा - "समीक्षा सिध्दान्त" पृष्ठ - ३५९।
२) मणि मधुकर - "पत्तों की बिरादरी" - पृष्ठ - मल पृष्ठ
३) - वहीं - - पृष्ठ - ६०।
४) - वहीं - - पृष्ठ - ६४।
५) - वहीं - - पृष्ठ - १६१।
६) - वहीं - - पृष्ठ - ६८।
७) - वहीं - - पृष्ठ - १००।
८) - वहीं - - पृष्ठ - १६२ / १६३।
९) - वहीं - - पृष्ठ - २२।
१०) - वहीं - - पृष्ठ - ४९।
११) - वहीं - - पृष्ठ - ६३।
१२) - वहीं - - पृष्ठ ८३।
१३) - वहीं - - पृष्ठ - १०३।
१४) - वहीं - - पृष्ठ - ९८।
१५) - वहीं - - पृष्ठ - १११।
१६) - वहीं - - पृष्ठ - ७७।
१७) - वहीं - - पृष्ठ - ८३।